सं भो.वि./जी.जी.एन./4-84/8747.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं व जे व्यान इन्जीनियरिंग व कैंस, बंसई रोड़ गुड़गांच, के श्रमिक श्री गिरधारी लाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्या इसमें इसके वाद लिखित मामले, में कोई श्रीकोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, भव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं ० 5415-3-% म/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए, श्रिधिसूचना सं ० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के सधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिणंय के लिए निर्विष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री गिरधारी लाल की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस,राहत का हकदार है ?

सं. थो. बि. /एफ.डी. /22-84/8754. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० आफिस मशीनज प्रा० लिं० 13/3, मथुरा रोड़, फरीवाबाद के श्रमिक श्री हजारी लाल क्षय उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मीकोनिक विवाद है:

बीर पृक्ति हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसिन्ए, शब, भौबोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की पर्द विवादों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, विवाक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, विनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा वक्क विविवयम की खारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादपस्त या उससे सुवंगत या उससे सम्बन्धित नीचे सिक्षा वाचना स्थावनिर्णय के निए निर्विष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादपस्त मामला है वा विवाद के वृतंगत अपवा सम्बन्धित मामला है:—-

क्या की हजारी लाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का इकदार है ?

सं. मो.वि./एफ.डी./8-84/8761.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) मै० एडको लेमीनैटस 14/1, मथुरा रोड़, फरीवाबाद, (2) मै० ग्रंतुल ग्लास इन्डस्ट्रीज प्रा० लि०, 14/1, मथुरा रोड़, फरीवाबाद कें श्रमिक श्री रार्जेन्द्रा प्रसाद तथा उसके इसके बाद लिखित मामले में कोई मौद्योगिक विवाद है;

भोर भूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसिंगए, भव, भौद्यौगिक विवाद भिद्यित्यम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई विवादों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी भिद्यस्वना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए भिद्यस्वना सं. 11495-जी-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के भन्नीन पिठत श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला स्थावनिर्णय के सिये निविष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अधवा वंकित मामला है:---

क्या भी राजेन्द्र प्रसाद की सेवामों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं.भी.बि./जी.जी.एन/8-84/8769 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० जे. एन. इन्जीनिवरिंग वसई रोड गुडगांबा के भनिक श्री रती राम तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसके बाद लिखित, मामले में कोई ग्रीधोणिक विवाद है;

श्रीर चूंकि इरियाणा के राज्यपाल, विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसिए, धन, घोषोगिक विवाद धिविषम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा हस्त की वर्द सस्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यधाल इसके द्वारा सरकारी घिष्ठमूचना सं. 5415-3-अम-68/ 15354, दिवांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए प्रधितृचना सं० 11495-जी-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958,

हारा उन्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, करीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मार्मला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जोकि उन्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रयवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री रती राम की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं धो वि । एफ. डी. | 15-84 | 8773. — चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं ट्रेक्टल टीर-फोर इण्डिया प्रा० लिं , मथुरा रोड , फरीदाबाद , के श्रमिक श्री विश्व नाथ तथा उसके प्रबच्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कीई श्रीद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हेरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिगंग हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीत समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, ग्रोबोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की द्वारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रविस् चना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए, ग्रविस्चना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रविस्चना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायोलय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रामक के बीच या तो विवादश्वरूत मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री विज्व नाथ की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

स. श्रो.वि. एन/10-84/8776 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल, की राय है कि मैं० पुरलेटर इण्डिया प्रा० लि०, गुडगांवा के श्रीमक श्री फतेह चन्द तया उसके प्रबन्धकों के मध्य इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है ;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसेलिए, ग्रब, श्रौडोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शवितयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं० 5415-3-श्रम-58/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढते हुए ग्रिधसूचना सं 11495-जी-श्रम-57/11245 दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधसूचना को धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादगस्त या उससे सुगंति या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त ग्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तौ विवादगस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:

क्या श्री फतेह चन्द की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो.वि/एफ डी./1-84/8780.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० के जी० खोसला कि मंत्रेशर लि. 18/कि० मि०, मथुरा रोड, फरीदाबाद के श्रीमक श्री प्रेम चन्द अग्रवाल तथा उसके प्रबन्धकों के बीज़ इसमें इसके बांद सिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

धौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वोछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रंब, श्रीद्योगिक विवाद भिष्ठिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी मिधिसूचना सं० 5415-3-श्र म-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हए मिधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक, 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त मिधिसूचना की धारा 7 के मधीन गठित श्रम न्यायलय, फरीदाबाद, को विवादमस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेनु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादमस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री प्रेम चन्द अग्रवाल की सेवाओं का संगापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का इकदार है ?